संत थॉमस स्कूल धुर्वा राँची

सत्र 2021 - 22

कक्षा - 7 **पुस्तक -मंथन**

विषय -हिन्दी

पाठ-2.अन्याय का विरोध

शब्दार्थ - गवर्नेस-संरक्षिका ,दब्बू-कमजोर ,तनख्वाह-वेतन , भीरु-कायर ,रूबल- रूसी मुद्रा बोदा- मूर्ख,नागा-अवकाश, ज्यादती-अन्याय,क्रूर-निर्दयी, निर्लज्ज-बेशर्म,अनर्थ-बेतुकापन अस्तित्व-पहचान

अभ्यास

प्रश्न-1.-प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

मौखिक

(क) लेखक ने जूलिया को अपने कमरे में उसकी तनख्वाह का हिसाब करने के लिए बुलाया।

(ख) जूलिया ने लेखक से दबे स्वर में बताया कि उसकी तनख्वाह चालीस रूबल महीना तय हुई थी।

(ग) लेखक की पत्नी ने जूलिया को कुछ पैसे दिए थे।यह बात लेखक की पत्नी और जूलिया ने लेखक को नहीं बताई।

(घ) जूलिया को आज तक अपने काम के बदले कभी भी तनख्वाह नहीं मिली । यह बात जानकर लेखक अचरज नहीं हुआ।

प्रश्न-2. लघुत्तरीय प्रश्न (लिखित)-

(क) जूलिया ने अपनी तनख्वाह चालीस रूबल महीना बताई।

(ख) जूलिया इतवार को लेखक के पुत्र कोल्या को घुमाने ले गई थी।

(ग) लेखक की बेटी तान्या के नए जूते चुरा लिए गए थे।

(घ) लेखक की पत्नी ने जूलिया को तीन रूबल दिए।

प्रश्न-3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

(क) लेखक जूलिया की तनख्वाह का हिसाब इसलिए करना चाहता था क्योंकि वह अपने

शर्मीले स्वभाव के कारण स्वयं पैसा नहीं मागैगी। उसे काम करते हुए दो महीने हो गए थे। उसे पैसों की जरूरत होगी।

(ख) जब लेखक ने कहा कि दो महीने के साठ रूबल तुम्हें तभी मिलेंगे जब महीने में एक दिन भी नागा न हुआ हो, इतवार को और इसके अलावा तीन दिन तुमने छुट्टिया मँनाई है। यह सुनकर जूलिया का चेहरा पीला पड़ गया।

(ग) लेखक का पुत्र कोल्या जूलिया से नजर बचाकर पेड़ पर चढ़ गया था। तब ख़रोंच लग जाने से उसकी जैकेट फट गई थी। जैकेट की भरपाई करने के लिए लेखक ने जूलिया की तनख्वाह से दस रूबल काटे।

(घ) लेखक जूलिया को सबक सिखाना चाहता था कि इस निर्दयी संसार में इंसान भला कहलाने के लिए दब्बू, भीरु, और बोदा बनकर अपने ऊपर होने वाले अन्याय का विरोध ना कर पाए तो लोग उसपर अत्याचार करेंगे। इस संसार में उसके लिए जीना मुश्किल हो जाएगा। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए निर्लज्ज और कठोर बनना पड़ता है। क्योंकि दब्बू और कमजोर इंसान के लिए इस संसार में कोई जगह नहीं है।